विचार बिन्दु

अविश्वास आदमी की प्रवृत्ति को जितना बिगाड़ता है, विश्वास उतना ही बनाता है। –धर्मवीर भारती

पोल की पोल खुल गई

हरियाणा चुनाव के नतीजों नें कई ख्यातनाम राजनीतिक समीक्षकों व एंकर्स की व बनावटी–ठकुर सुहाते एग्जिट पोल्स की पोल खोल कर रख दी। इस लेखक के एक मोटी बात समझ में आई कि भारत की राजनीति में सफलता की कुंजी है कि या तो समाज को विभिन्न जातियों में बांटो, एक दूसरी के विरुद्ध करो या फिर जातीयों का गठजोड़ करो।

हरयाणा के परिणामों में यह साफ झलकता है। एक बड़ी राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जाती को यथासम्भव थोड़ा बहुत बांटो और अन्य कम जनसंख्या वाली जातियों को उसके विरुद्ध भड़काओ।जिस पार्टी नें ऐसा सफलतापूर्वक किया वह सत्तासीन हो गई और जो यह नहीं समझ सकी वह को दोष देकर खीज मिटा रहे है।

कांग्रेस की दयनीय स्थिति पर, नीतियों के खोखले पन पर तथा नेताओं के परिवारवाद व अहंकार के सम्बंध में इस लेखक का 29 मार्च, 2022 के राष्ट्रदूत में लेख प्रकाशित हुआ था, जो वर्तमानं में भी प्रसांगिक है। लेख का शीर्षक इस प्रकार है::––

आम आदमी प्रश्न पूछते है कि वह कांग्रेस से क्यों जुड़ा रहे या कोई नया व्यक्ति उस से क्यों जुड़े?

तब की जनसंघ व अब की भाजपा छोटी पार्टी थी तब इन्हें प्रतिक्रिवादी पार्टीयां कहा जाता था क्योंकि वे सरकार की हर अच्छी–बूरी योजना, कदम की आलोचना ही करती थी। यद्यपि इन पार्टियों ने कुछ मुद्दे ऐसे भी पकड़ रखे थे जिन्हें वे अपने हर चुनावी मैनिफेस्टो में दोहराते रहे है, जैसे– धारा 370, समान नागरिक संहिता व अन्य। जनसंघ, भाजपा की इन मुद्दों पर स्पष्टता थी, चाहे तत्समय आम जन मानस उसे स्वीकार नहीं करता था।

वर्तमानं में कांठोस वैसा ही कुछ कर रही है जैसा किसी जमाने में जनसंघ, भाजपा करती थी।

आज, आम जन को प्रभावित, आकर्षित करने के लिए कांग्रेस की कोई स्पष्ट और भाजपा से बहुत ज्यादा भिन्न विचारधारा नजर नहीं आती सिवाय उलझी सी धर्म निरपेक्षता पर कांग्रेस की राय के। यह राय भी भाजपा की ''सब का साथ, सबका विश्वास, सब का विकास'' नीति के सामने कुंद होती नजर आती है। जनसंघ, भाजपा उस समय छोटी पार्टियां जरूर थी किन्तु हर समय 20,30,50 लोगों के साथ ही सही, गली मोहल्लों में, आम आदमी से जुड़े बिजली, पानी, दफ्तरों में छोटे–मोटे भ्रष्टाचार के मुद्दों पर संघर्ष करती हुई, अपनी मौजदगी दर्ज कराती दिखती थी।

कांग्रेस प्रवक्ताओं के तो बड़े ही अजीब तर्क हैं––कभी बीजेपी के भी दो संसद थे, हमने उन्हें यहां हराया–वहां हराया–फिर हराएंगे–ध्रुवीकरण से जीते है, हिंद–मुसलमान करके जीते––क्या इन तर्कं से कांग्रेस का रिवाइवल हो जाएगा? नहीं। कांग्रेस के बड़े से बड़े नेताओं को सड़कों पर आना होगा––आगे कांग्रेस क्या करेगी, क्या विजन है, यह जनता को बताना होगा।

मात्र सरकार की आलोचना, प्रतिक्रियाएं देने से तो कम नहीं चलने वाला

आज भाजपा की यूएसपी मुख्यत: वे योजनाएं है जो किसी जमाने में कांग्रेस ने शरू की। टार्गेटेड राशन योजना कांग्रेस की देन किन्तु गरीब के राशन की चोरियां होती थी, इस से कोई इनकार नहीं कर सकता। आधार और पोश मशीन के कारण, अब इन चोरियों पर अंकुश लगा है। गरीब का राशन अब भी डीलर इधर–उधर करता है किंतु उसकी सहमति से।

मनरेगा एक्ट व योजना कांग्रेस की देन। नि:सन्देह एक अत्यंत अच्छी योजना थी किन्तु इसे कांग्रेसी नेताओं, कार्यकर्ताओं नें सभा, रैलियों में भीड़ इक्कठा करने का साधन बना लिया। कांग्रेस के मंत्री तक यह स्वीकार करते हैं। मस्ट्रोल्स में फर्जी नाम, बिना काम किए नाम होना, बिना काम हुए ही मस्ट्रोल्स भरना, पँचायत स्तरीय गुट बाजी के आधार पर अनावश्यक कामों का चयन और आवश्यक कामों का चयन न करने की आम शिकायतें थी। इन तरीकों से, इसमें पंचायत स्तर से लेकर ऊपर तक गबन होता था।

वही योजना अब भी लागू है, छोटा–मोटा भ्रष्टाचार अब भी है किंतु आधार और बैंक खातों में सीधे भुगतान नें उस पर अंकुश लगा दिया। कांग्रेस कहती रहे कि भाजपा सरकार ने मनरेगा बजट कम कर दिया वगैरा वगैरा, पर जनता ऐसी बातें अस्वीकार कर रही है।

स्वच्छ भारत योजना भी, टोटल सैनिटेशन कम्पेन के नाम से यूपीए सरकार में चल रही थी, किन्तु भाजपा सरकार ने इसे एक अभियान का रूप देकर घर–घर पहुंच दिया। सरकारी सहायता, न्यूनतम भ्रष्टाचार के साथ बेनेफसीयरी के पास सीधे बैंक खाते में पहुंच गई। कांग्रेस केवल यही आलोचना करती रही कि बिना पानी शौचालय किस काम के। ऐसी आलोचनाओं को आम आदमी अस्वीकार कर देता है।

भ्रष्टाचार समाज, देश, आमआदमी के लिए नासूर बन चुका। कांग्रेस की सरकारों का रिकार्ड इस बिंदु पर उज्ज्वल नहीं। कांग्रेस कुछ भी कहेगी, जनता बमुश्किल विश्वास करेगी। गिनी चुनी 1,2 जो सरकारें हैं, उनकी कार्यप्रणांली साफ करके इरादे तो जाहिर करें। राजस्थान में तो मंत्री तक मानते है कि''---इस प्रकार के काम बिना भ्रष्टाचार के सम्भव नहीं--'' यदि कांग्रेस के बड़े-छोटे नेता दैनिक समाचार पत्र पढ़ते हैं तो मन में तो वे भी मानते होंगे कि यहां नीचे से लेकर ऊपर तक भयंकर भ्रष्टाचार का बोलबाला है।

आधार नम्बर की योजना के क्रियान्वयन को परवान चढ़ाया कांग्रेस नें। कई ख्यातनाम भाजपाइयों ने इसका पानी पी पी कर विरोध किया । सत्ता में आते ही उन्ही नेताओं ने इसके महत्व को समझा और आम आदमी के हित में उसका व्यापक स्तर पर उपयोग कर लिया। आम आदमी को मिलने वाली सारी सरकारी सहायताएं जैसे छात्रवृतियां, प्रधान मंत्री आवास योजना, प्रसूता सहायता, किसान सम्मान निधि राशि आदि आदि, सीधे बेनेफिसियरी के खाते में नकद, बिना बिचोलियों और छिज्जत के जाने लगी। किसको अच्छा नहीं लगेगा।

आम आदमी के लिए लोकतंत्र का मतलब चुनाव और उसके नजरिये से चुनाव हो रहे तो लोकतंत्र सुरक्षित। संस्थाएँ मतलब पँचायत, राशन डीलर, तालुका–जिला दफ्तर और वहाँ उसका काम बिना टके पैसे हो जाए तो संस्थाएं सही हैं। उसके आगे बड़े–बड़े वक्त कुछ भी कहें कि लोकतन्त्र–संस्थाएँ खतरे में, आम आदमी के लिए सब महत्वहीन है। कांग्रेस–विपक्ष समझे इस बात को।

आम आदमी प्रसन्न है, उसे उपरोक्त कामों के लिए किसी के आगे हाथ जोड़ते नहीं फिरना पड़ता। वह इसका श्रेय भाजपा को देता है। कांग्रेसी नेता गाला फाड़–फाड़ कर कहते रहें कि योजना उन्होंने शुरू की पर इनका सफल क्रियान्वयन कर भाजपा नें सिद्ध कर दिया––''जो सही ढंग से लागू करे सो आम खाए''।

आज भाजपा टीवी चैनल्स के माध्यम से, अपने गिने–चुने छुटभैये नेताओं से नैरेटिव सेट करवाती है, कांग्रेस उस पर उतावलेपन से रियेक्ट कर फंसती है। तीन तलाक के मुद्दे पर जहां भजपा स्पष्ट थी, कांग्रेस लगातार ढुलमुल दिखी।

हिंदुत्व के मुद्दे पर अनावश्यक बयानबाजी कर फंसती है जबकी आम आदमी अच्छी तरह जानता है धर्म क्या है और धर्म का सत्ता के लिए दुरुपयोग क्या है? सोची समझी रणनीति के अनुसार, काऊ विजिलेंट्स, मोब लिंचीन, पशुधन परिवहन व इसी प्रकार के धार्मिक भावनाओं से जुड़े मुद्दों को समय समय पर आवश्यक्तानुसर उछाला जाता है और कुछ समय बाद उन्हें ठंडे बस्ते में डाल दिया जाता है। इन पर कांग्रेस की कोई धरातलीय नीति, कार्ययोजना नही है और न जो एलिमेंट्स ऐसा करते है उनका सशक्त विरोध की क्षमता है। कांग्रेस का सेवादल संगठन निष्क्रिय सा है। यह संगठन बजरंग दल, गौ रक्षा दल व अन्य ऐसे संगठनों का कैसे सामना कर सकता है?

शाहबानो केस, बाबरी मस्जिद ताला खोलने पर कांग्रेस नें गलतियां की–परिणाम भुगत रही है। धार्मिक उन्माद व दंगे के मुद्दे भी कांग्रेस को सहायता नहीं कर सकते क्योंकि कांग्रेस का भी दामन साफ नहीं है।

कांग्रेस की लगातार चुनावी हार के लिए केवल राहुल गांधी की ओर अंगुली उठाना भी, सत्यता से मुंह मोड़ना है। माना की राहुल गांधी धुँवाधार भाषण नहीं दे सकते किन्तु जो अंगुली उठा रहे है, वे नेता क्या करते रहे है? के डर से सब दड़बों में छुपे है––राहुल, कम से कम, निर्भीकता से मुद्दे उठा तो रहे है।

भाजपा नेताओं के भाषणों में हर छोटी–बड़ी उपलब्धि का श्रेय मोदी जी को आदर के साथ दिया जाता है, कांग्रेस से अपने पूर्वप्रधानमंत्री नरसिम्हा राव व मनमोहन सिंह ऐसे आदरभाव का अभाव रहा।

क्या हो कांग्रेस की नई यूएसपी???? वर्तमानं सरकार की लोक हित नीतियों की मात्र आलोचना या उन्हें बन्द करने की बात नई यूएसपी नहीं हो सकती। मंहगाई का गली मोहल्लों तक विरोध हो सकती है बशर्ते इसे नियंत्रण का स्पष्ट रोड मैप साथ हो। अनेक कलिष्ट कानूनों का सरलीकरण, अनावश्यक कानूनों को समाप्त करना, लोकसभा–विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाना, सरकारी नौकरियों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 50 प्रतिशत करना, सरकारी कामकाज में निर्णय बिना किसी प्रकार के धार्मिक अधरों पर तुष्टिकरण के करने का वादा, त्वरित न्याय सुलभ करवाना, इसका रोड मैप–––किसान कल्याण के लिए एमएसपी, इसे मंहगाई से जोड़ कर सतत रिवीजन हो और एमएसपी न मिलने से किसानों पर बढ़े कर्जे पर स्पष्ट नीति रखें–कृषि का बड़े स्तर पर विविधीकरण हो––कृषि जुड़ी नीतियों के निर्माण व क्रियान्वयन के साथ किसानों के संगठनों को जोड़ा जाए,उनकी राय ली जाए।

सैनिक कल्याण, कर्मचारी कल्याण, श्रमिक कल्याण, जनअभव –अभयोग निराकरण, निजीकरण, शिक्षा–पाठ्य पुस्तकों आदि पर स्पष्ट नीतियां घोषित करे, मात्र खाना पूर्ति वाली नीतियां, योजनाएं नहीं।

भ्रष्टाचार समाज, देश, आमआदमी के लिए नासूर बन चुका। कांग्रेस की सरकारों का रिकार्ड इस बिंदु पर उज्ज्वल नहीं। कांग्रेस कुछ भी कहेगी, जनता बमुश्किल विश्वास करेगी। गिनी चुनी 1,2 जो सरकारें हैं, उनकी कार्यप्रणांली साफ करके इरादे तो जाहिर करें। राजस्थान में तो मंत्री तक मानते है कि''---इस प्रकार के काम बिना भ्रष्टाचार के सम्भव नहीं--'' यदि कांग्रेस के बड़े–छोटे नेता दैनिक समाचार पत्र पढ़ते हैं तो मन में तो वे भी मानते होंगे कि यहां नीचे से लेकर ऊपर तक भयंकर भ्रष्टाचार का बोलबाला है।

आज कांग्रेस के बारे में आम धारणा यह है कि यह केवल ट्विटिया, सोशल मिडिया पर पोस्ट्स तक सीमित, जागीरदारों की पार्टी मात्र है जहां आम कार्यकर्ता को कहा जाता है 25 साल रगड़ाई होगी तब कांग्रेस की रीतिनीति समझ आती है और तब बात सुनी जाएगी। आज का युवा क्यों आकर्षित हो ऐसी पार्टी की ओर जहां छोटे बड़े सारे पद परिवारों, रिश्तेदारों और पूर्णत: जागीरदार नेताओं पर आश्रितों लिए आरक्षित हों ?

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

आखिर कब रुकेंगे सड़क हादसे....

अविनाश जोशी

सड़क हादसे जिंदगी की रफ्तार को रोक देते हैं। परिवार टूट जाते है एवम कई बार तो यह प्रश्न होता है की आगे की जिंदगी कैसे जी जाएगी। ऐसा कोई दिन नहीं गुजरता जिस दिन देश के किसी भी भाग में सड़क हादसा न हो और कुछ लोगों को जान से हाथ न धोना पड़े। अमूमन सड़क दुर्घटनाओं का शिकार होने वाले आम जन होते हैं। इसलिए वे अखबारों की सुर्खियां नहीं बन पाते, जिससे उन दुर्घटनाओं पर लोगों का ध्यान भी नहीं जाता है। अनुमानत हमारे देश में हर मिनट में एक सड़क दुर्घटना होती है और हर तीन मिनट में सड़क दुर्घटना में एक जान जाती है। दुनिया में सबसे ज्यादा सड़क हादसे भारत में ही होते हैं। जबकि चीन, रूस और अमेरिका जैसे कई देशों में भारत की अपेक्षा कहीं अधिक संख्या में कारें हैं। दुर्घटनाओं पर राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े दिल दहलाने वाले हैं। पिछले दस साल में सड़क हादसों में होने वाली मौतों में लगभग चालीस प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि इस अवधि में आबादी में सिर्फ बारह प्रतिशत का इजाफा हुआ है। ज्यादातर मौतें दो–पहिया वाहनों की दुर्घटना में हुई हैं और तेज व लापरवाही से वाहन चलाना उनकी वजह रही है। ताजा आंकड़ों के अनुसार 2021 की तुलना में सड़क दुर्घटना 11.9 फीसद, इसमें मृत्यु 9.3 फीसद और स्थायी अपंगता 15.3 फीसद की दर से बढ़ी है। राष्ट्रीय राजमार्ग और एक्सप्रेस हाइवे पर दुर्घटना दर 36.2 फीसद और राज्य मार्गों पर 39.4 फीसद है। इन दुर्घटनाओं में मरने वाले 83.3 फीसद अपने परिवार को पालने वाले कामकाजी लोग थे।

आज के युग में विज्ञान ने मनुष्य का जीवन अत्यंत सरल बना दिया है उससे उतना कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ता जितना पहले करना पड़ता था हर क्षेत्र में आज मनुष्य वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग करता है वाहन भी विज्ञान की ही देन है जिसके माध्यम से आज हम एक दूसरे स्थान तक आसानी से पहुंच जाते हैं परंतु इन्हीं भावनाओं के कुछ नुकसान भी है वायु को दूषित करने के अतिरिक्त सड़क दुर्घटना भी इन्हीं वाहनों की देन है। सड़क सुरक्षा के मानकों का महत्त्व समझना और समझाना दोनों जरूरी है, क्योंकि देश में सड़क नेटवर्क का तेजी से हो रहे विस्तार, गाड़ियों की संख्या में हो रही वृद्धि और शहरीकरण का नकारात्मक पक्ष सड़क दुर्घटनाओं के रूप में सामने आ चुका है। सड़क हादसों में होने वाली मौतें और अपंगता की बढ़ती संख्या ने यह सोचने पर विवश किया है कि क्या विकास की धुरी मानी जानी वाली सड़कें मौत का प्रमुख कारण और जगह बनती जा रही हैं?

हमारी सड़कों पर वाहनों का दबाव बढ़ता जा रहा है। इस पर नियंत्रण के उचित कदम उठाए जाने चाहिए। साथ ही वाहनों की सुरक्षा के मानकों की समय–समय पर जांच होनी चाहिए। भारी वाहन और पब्लिक ट्रांसपोर्ट को परमिट दिए जाने की प्रक्रिया में कड़ाई बरती जाए। ड्राइविंग लाइसेंस के लिए न्यूनतम शैक्षिणक योग्यता भी तय की जाए, साथ ही छोटे बच्चों और किशोरों के वाहन चलाने पर कड़ाई से रोक लगे। तेज रफ्तार, सुरक्षा बेल्ट का प्रयोग न करने वालों और शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो। स्कूलों में भी सड़क सुरक्षा से जुड़े जागरूकता अभियान चलाए जाएं, तभी भारत में सड़कों पर लगातार हो रही दुर्घटनाओं पर रोक लग पाएगी।

शहरों में लालबत्ती पार करने, अधिक रफ्तार से गाड़ी चलाने और आगे निकलने की प्रवृत्ति आम है। यह दुर्घटनाओं को आमंत्रित करने जैसा है। इससे सैकड़ों लोग घायल होते और मरते हैं। इसमें यातायात पुलिस की लापरवाही कम जिम्मेदार नहीं है। वहीं हादसा होने के बाद घायल को तुरंत अस्पताल पहुंचाने में हुई देरी घायल व्यक्ति की मौत का बड़ा कारण है, मगर आम लोग घायल व्यक्ति की मदद के लिए आगे नहीं आते। राज्य सरकार की तरफ से घायल को तत्काल चिकित्सा और राहत पहुंचाने वाली सुविधाएं भारत में बहुत कम हैं। इससे भी घायल व्यक्ति की मौत असमय हो जाती है।

पिछले कुछ सालों में भारत सरकार ने सड़क सुरक्षा संबंधी कई उपाय किए हैं। उनमें सुरक्षित बुनियादी ढांचे को प्रोत्साहित करना, जागरूकता पैदा करना, सुरक्षा कानूनों का प्रवर्तन, सड़क सुरक्षा सूचना का डेटाबेस तैयार करना जैसे उपाय शामिल हैं। इसके कुछ सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। मगर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं ने इन सारे उपायों पर सवालिया निशान लगा दिए हैं। वजह है कि इन उपायों का पालन ठीक से नहीं कराया जा रहा है। कठोर कानून के बावजूद लोगों को उसका भय नहीं सतता, जिसका परिणाम प्रतिदिन सैकड़ों सड़क हादसों के रूप में सामने आता है। विडंबना ही कही जाएगी कि जो सुझाव सड़क दुर्घटनाओं से बचने के लिए यातायात विशेषज्ञों द्वारा दिए जाते रहे हैं उन्हें मुस्तैदी के साथ पालन कराने के लिए यातायात पुलिस कुछ दिन तो काम करती है, लेकिन धीरे–धीरे फिर वही पुराना ढर्रा कायम हो जाता है। वरना क्या कारण है कि भारत में ही सबसे अधिक सड़क हादसे होते हैं?

विश्व के कुल वाहनों का महज दो फीसदी भारत में हैं, पर सड़क हादसों में होने वाली मौतें बारह फीसदी से ज्यादा हैं। दुनिया के तमाम देशों ने अपने कड़े सड़क कानून और जनजागरूकता अभियानों के जरिए सड़क हादसों में वृद्धि नहीं होने दी, लेकिन पिछले बीस सालों में सड़क दुर्घटनाओं की वजह से भारत में पचहत्तर फीसद से ज्यादा की वृद्धि हो चुकी है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में कितना सड़क कानूनों का पालन किया और कराया जाता है। सड़क सुरक्षा पर जारी की गई विश्व स्थिति रिपोर्ट ने सड़क दुर्घटनाओं के बढ़ते मामले की मुख्य पांच वजहें बताई हैं। इनमें सीमा से ज्यादा तेज गाड़ी चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, सुरक्षा पेटी न बांधना, दुपहिया चलाते वक्त हेलमेट न पहनना और बच्चों की सुरक्षा के उपायों की अनदेखी शामिल है।

इंटरनेशनल रोड फेडरेशन के मुताबिक नब्बे फीसदी हादसे ड्राइवर की गलती की वजह से होते हैं। इस पर यह सवाल उठना लाजिमी है कि क्या ड्राइविंग लाइसेंस देते वक्त कायदे से जांच–परख की जाती है? क्या सुरक्षा मानकों पर गाड़ियों की कड़ी जांच–पड़ताल होती है? ट्रैफिक नियम तोड़ने वालों पर क्या और सख्ती होनी चाहिए? भारत में रोज तेरह सौ से ज्यादा सड़क हादसे होते हैं और हर दिन सड़क हादसों में करीब चार सौ मौतें होती हैं। सड़क हादसों में सालाना करीब बीस अरब डॉलर का नुकसान होता है। भारत में बारह करोड़ से ज्यादा वाहन हैं और इनके चलने के लिए पर्याप्त सडकें होना जरूरी है। सवाल यह है कि क्या सड़क हादसों में होने वाली मौतों को रोका जा सकता है?

जिस तरह देश–समाज की सुरक्षा वाले कानूनों का पालन महज दिखावा बन कर रह गया है वैसे ही यातायात नियमों की अनदेखी एक प्रवृत्ति बन गई है। यातायात नियमों का पालन, अतिरिक्त सावधानी, वाहन को नियंत्रित सीमा में रखना, पैदल यात्रियों का सड़क पार करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतना, सड़कों को मानक रूप में बेहतर बनाए रखना और 'ओवरटेक' करने से बचना जरूरी है। सड़क सुरक्षा सप्ताहों में जिस तरह पुलिस यातायात नियमों के पालन के लिए लोगों को जागरूक और बाध्य करती है, वैसी जागरूकता हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन जाए, तो हादसों में कमी लाई जा सकती है।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

रूपनगढ़ चिकित्सालय में लाखों की सोनोग्राफी मशीन धूल फांक रही है

चिकित्सा विभाग की घोर लापरवाही, सोनोलॉजिस्ट नही होने के अभाव में मशीन बंद है

रूपनगढ़, (निसं)। रूपनगढ़ के राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में पिछले 6 माह से सोनोग्राफी मशीन सोनोलॉजिस्ट नहीं होने के कारण बंद पड़ी है, लेकिन चिकित्सा विभाग इस और कोई ध्यान नहीं दे रहा है। वैसे भी रूपनगढ़ चिकित्सालय की पूरी बिल्डिंग जगह–जगह से उधड़ गई है।

गौरतलब है कि 6–7 माह पहले राजस्थान सरकार के जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने प्रसूता महिलाओं को हो रही परेशान को देखते हुये रूपनगढ़ चिकित्सालय में 45 लाख रुपये की लागत से विधायक कोष से सोनोग्राफी मशीन दी जो मशीन आज दिन तक बंद पड़ी है। उस समय मंत्री ने हाथों हाथ एक महिला चिकित्सक की नियुक्ति भी करवा दी लेकिन वह महिला चिकित्सक भी छुट्टियों पर है। अब ऐसे में प्रसूता महिलाओं का सोनोलॉजिस्ट नहीं होने के अभाव में यह लाखों रुपए की सोनोग्राफी मशीन कबाड़ हो रही है। मंत्री सुरेश सिंह रावत ने मशीन तो अस्पताल में दे दी ग्रामीणों से वाहवाही तो लूट ली लेकिन आज तक इस समस्या की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया ना ही चिकित्सा विभाग के कोई अधिकारी ध्यान दे रहे हैं। वहीं चिकित्सालय की बिल्डिंग भी जगह–जगह से जर्जर हो गई है। जिसका एस्टीमेट भी बनाकर उच्च अधिकारियों को भेज दिया गया है लेकिन इस और भी कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

■ सोनोग्राफी मशीन होने के बावजूद भी प्रसूता महिलाओं को भारी परेशानी हो रही है

तीन पाक विस्थापितों को भारतीय नागरिकता मिली

जिला कलेक्टर नमित मेहता ने प्रमाण पत्र दिये।

भीलवाड़ा, (निसं)। पाकिस्तान से आए तीन विस्थापितों के लिए मंगलवार का दिन खुशियां लेकर आया। जिला कलेक्टर नमित मेहता ने तीन पाक विस्थापितों जिनमें अशोक, विजय कुमार और जोनी कुमार को भारतीय नागरिकता प्रमाण पत्र दिए। सभी को राजनिष्ठा की शपथ दिलाने के बाद भारतीय नागरिकता प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

अशोक, विजय कुमार और जोनी कुमार ने कहा कि आज हमारी नागरिकता की मुराद पूरी हुई है, इससे बड़ा गर्व हमारे लिए क्या हो सकता है। केन्द्र व राज्य सरकार के साथ ही जिला प्रशासन को सभी ने धन्यवाद देते हुए आभार जताया। इस अवसर पर एडीएम सिटी प्रतिभा देवठिया भी मौजूद रही।

मेड़ता में रावदूदा की अष्टधातु से बनी मूर्ति स्थापित

मेड़ता सिटी, (निसं)। मेड़ता शहर के संस्थापक और भक्त शिरोमणि मीरांबाई के दादा राव दूदा की अष्टधातु की अश्वरूढ़ प्रतिमा को बुधवार सप्तमी के पर जोधपुर के कलात्मक पत्थर से निर्मित फाउंडेशन पर विराजित किया गया।

राष्ट्रकूट कुलभूषण वीर शिरोमणि श्री राव दूदा मेड़ताधीश मूर्ति निर्माण समिति के अध्यक्ष महेशपालसिंह बड़ू, संयोजक विजयसिंह सिरसू, कोषाध्यक्ष छोटूसिंह भुनास, उपाध्यक्ष अभयसिंह भैंसडा, सचिव दिलीप सिंह बछवारी, सदस्य शिवप्रताप सिंह ईडवा, डॉ. गोविंदसिंह सहित सदस्यों ने उपस्थित होकर विधिवत पूजा–अर्चना कर मूर्ति स्थापित कराई। इस दौरान अध्यक्ष महेशपाल सिंह ने बताया कि जयपुर में बनी इस अष्टधातु की प्रतिमा का वजन तीन टन तथा ऊंचाई 16 फीट है, करीब एक वर्ष में बनकर तैयार हुई इस प्रतिमा का भव्य अनावरण समारोह देवउठानी एकादशी के बाद किया जाएगा। जयपुर शहर के आनंद कला निकेतन में बनकर तैयार हुई इस प्रतिमा को अलग–अलग हिस्सों में मेड़ता लाया गया। राजपूत समाज के वित्तीय सहयोग से निर्मित यह प्रतिमा राव दूदागढ़ भवन में स्थापित की गई है। बुधवार को इस मूर्ति का रसायन व कलर का कार्य शुरू किया गया है। इस अवसर पर जयपुर के मूर्तिकार विकास कुमार शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता धनसिंह राठौड़, मीरांबाई पैनोरमा प्रबंधक नरेंद्रसिंह जसनगर, नैनसिंह जोधा, दीपक कुमार सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

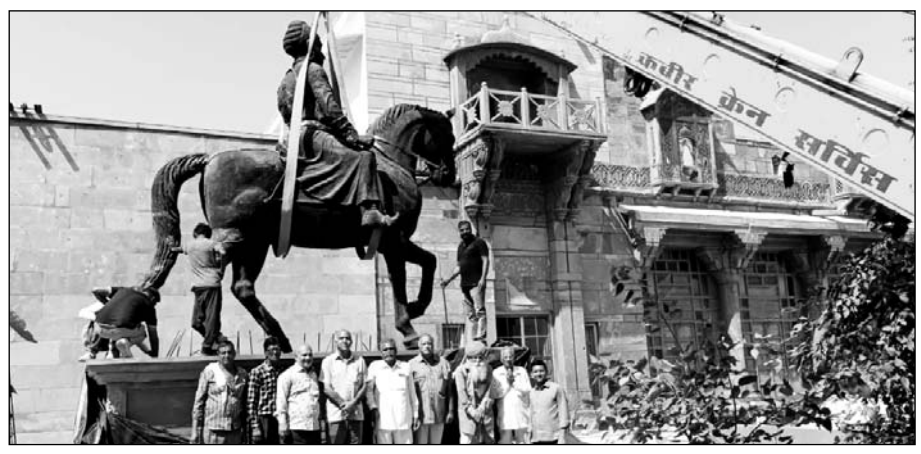

जोधपुर के कलात्मक पत्थर से निर्मित फाउंडेशन पर राव दूदा की मूर्ति को स्थापित किया।

अज्ञात हिंसक वन प्राणी के हमले से 22 भेड़ मरी

बौंली–बामनवास, (निसं)। क्षेत्र के डूंगरवाडा ग्राम पंचायत के गुर्जर कोलेता गांव में अज्ञात हिंसक वन प्राणी के हमले से 22 भेड़ों की मौत हो गई एवं 16 घायल हो गई, जिनका मौके पर ही पशु चिकित्सा टीम द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया। सूचना पर बामनवास थाना पुलिस, वन विभाग की टीम मय पशु चिकित्सा टीम के साथ मौके पर पहुंची एवं घायल भेड़ों का मौके पर प्राथमिक उपचार शुरू किया।

वनपाल जल सिंह ने बताया कि डूंगरवाडा ग्राम पंचायत के गुर्जर कोलेता का गांव के जयकिशन गुर्जर का 51 भेड़ों का झुंड बाड़े में बंधा हुआ था। रात्रि को किसी हिंसक वन प्राणी ने हमला कर बाड़े में बंधी 22 भेड़ों को हमला कर मार डाला एवं 16 को घायल कर दिया। मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम में शामिल सहायक वनपाल पंकज शर्मा व वनकर्मी अमर सिंह ने मौके पर जांच व पगमार्ग के आधार पर जंगली भेड़िया को इस हमले का आधार माना है।

राशिफल गुरूवार 10 अक्टूबर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र शुक्रवार प्रात: 5:41 तक, अतिगंड योग रात्रि 4:36 तक, वणिज करण दिन 12:32 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कन्या, चन्द्रमा–धनु, मंगल–मिथुन, बुध–कन्या, गुरू–वृष, शुक्र–तुला, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज भद्रा दिन 12:32 से रात्रि 12:19 तक रहेगी। बुध तुला राशि में दिन 11:20 से प्रवेश करेगा। आज महा सप्तमी, सरस्वती पूजन, त्रिदिनात्मक दुर्गापूजन आरम्भ होगी और अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन 12:32 से प्रारम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:54 तक, चर 10:47 से 12:14 तक, लाभ–अमृत 12:14 से 3:07 तक, शुभ 4:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:28, सूर्यास्त 6:00

मेष

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कन्या

घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।